अध्याय - २

(२:१) प्रेमानंद - कवि एवं कृतित्व
(२:१) प्रेमानंद - कवि एवं कृतित्व

(२:१:१) प्रेमानंद कवि एवम् कृतित्व
(२:१:२) प्रेमानंद कृतित्व
(२:१:२:१) भक्तिबोधकी कविता
(२:१:२:२) भक्तकविके प्रार्थना पद
(२:१:२:३) कृष्ण -कीर्तन
(२:१:२:४) कृष्णरूप - माधुरीका गान
(२:१:२:५) कृष्णबाल -लीला
(२:१:२:६) रास तथा बाण लीला
(२:१:२:७) गोपी भावोंका ज्ञान
(२:१:२:८) कृष्ण विरह की कविता
(२:१:२:९) सहजानंद - संकीर्तन
(२:१:२:१०) अन्य सर्जन
(२:१) प्रेमांत्द - कवि एवं कृतित्व

भारत की भूमि पुर्व आत्माओं की भूमि है। समय के अनुसार कितने ही बदलाव आते रहे, उन्होंने के साथ-साथ भारत भूमि पर उत्पन्न होनेवाले महर्षि, संत, आदि भी विभिन्न स्वरूपों में मानस-चेतना को जागृत करने के लिए आविष्कृत होते रहे हैं। इस प्रकार भी होते हैं।

एक ओर भारत-भूमि का बायाँ रूप-मनोरमता का छटा बिखरता है, तो दूसरों ओर भारत की भीतरी सुन्दरता उसमें उत्पन्न होने वाले आम जन-जीवन को रोशनी प्रदान करनेवाले यहाँ के संतों पर आविष्कृत है। ये संत समय-समय पर इस भूमि पर जन्म लेकर जन-जीवन के मानसिक स्तर को ऊंचा उठाते रहे हैं।

पीछे आद्याय में हमने देखा कि धर्मप्रद्युः देश भारत भी न केवल किसी एक स्थान पर वर्ष वातावरण के कौन-कौनें विभिन्न जातियाँ एवं धर्मों के संतों का आविष्कर्ष हुआ और उन्होंने अपने इर्द-गिर्दों का भाव और स्मरण करने वालों को अलेक्विया बनाना का प्रयास किया। हमने जानकारी प्राप्त की और इस संरचना के अपेक्षाकृत कवियों के बारे में भी ख़ुश्स रूप से जानकारी हासिल की।

स्वामिनारायण संप्रदाय के इन्हें अपेक्षाकृत कवियों में से कवि प्रेमांत्द का नाम बर्द आदर के साथ निया जाता है।

गुजरात में दो प्रेमांत्द आविष्कृत हुए। जिसमें एक वैष्णवीय परम्परा एवं दूसरे स्वामिनारायण परम्परा के, एक प्रेमांत्द के इर्द-गिर्द श्रीकृष्ण है। तो दूसरे प्रेमांत्द के इर्द-गिर्द श्री सहजात्मक हुए है। हम यहाँ पर स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़े हुए प्रेमांत्द की चचा कर रहे हैं जिनके इर्द-गिर्द सहजात्मक हुए हैं।

जन्म:

प्रेमांत्द के जन्म के विषय में अनेक कविताध्यक्ष हैं, जिनमें से कुछ के इस प्रकार है।

एक मत के अनुसार प्रेमांत्द का जन्म नववनाय के पास ओगाना गाँव की तुल्य कौम में हुआ था। यह लोग गाने बजानेका काम करने के कारण यह कौम काफी नीचे जाति समझी जाती थी और इस जाति में रूढ़ होने वाला बालक दुर्बिक्ष्याती स्नान करता था क्योंकि उसका काम धर-उधर भटक कर गामन करना ही होता था। जिससे वह लोगों की दृष्टियों में होना माना जाता था।

प्रेमांत्द इसी जाति में उत्पन्न हुए और उस पर सोने में उस के यह विशेष बेश्महत्त हो गया। यह बिलकुल बेश्महत्त हो गया। परंतु इस बेश्महत्त बालकों जाति में स्थानीय आदिवासी देश क्रांति तथा अति मधुर केंद्र प्रदान किया था। मधुर केंद्रों का जन्मजात प्राप्तियों इसे सत्ता दिन दिन बढ़ाते गये।

१. गुजरात वर्णसंग्रह सो. के प्रमुख पत्र बुधप्रकाश से. सन् (१६६१)
गना दिया था।

प्रेमानंद के बारे में कवि दलपतराम ने ही सबसे पहले थोड़ी सी जानकारी प्रदान की थी। गुजरात वर्णाश्रम सोसायटी के मुख्य पत्र 'वृद्धिप्रकाश' मासिक में सन् 1869 में उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि "स्वामी प्रेमानंद पूर्वावधि में गजटी अर्थात् गवेषणा जाति के थे।" कवि दलपतराम ने आपके बारे में यह भी लिखा है कि आपका स्वर इतना मधुर था कि गवेषणे थे। वे थे भी आपके पास गायन विधा सीखने आते थे।

उपरोक्त कविताओं के अंतिकार उनके बारे में और भी कविताओं प्रचलित हुई है।

(१) प्रेमानंद स्वामी का जन्म लगभग सं 1840 में भी माना जाता है। प्रचलित है कि सं 1870 जी में सहस्यानंद स्वामी से उनके मुलाकात हुई और तब उन्होंने दोषा ली तथा सं 1811 में वह अक्षरभाषा की शरण में आ गये।

(२) दूसरी प्रचलित धारणा है कि आप गंधर्वकुल में उत्पन्न हुए तथा अपने सींदूर एवं सुमधुर वंड के कारण छोटेपटे में ही बेचारियों के साथ मिल गये थे। बेचारियों के उस झुड़ में उन्हें जानविद्याम लोकम साज़ अपने पास बुला दिया तथा दूरार्थक की यात्रा करने के लिए अपने साथ लाया तथा फिर सहस्यानंद स्वामी से मिलाकर करवा दिया।

(३) प्रेमानंद स्वामी का रंग उज्ज्वल था एवं वह सींदूरपूर्ण पुरुष थे।

(४) प्रेमानंद साधु थे परंतु साधुओं के झुड़ में रहने पर भी उनकी चाल ढाल आसन आदि अन्य व्यः गहनों से अलग प्रकार का था।

(५) प्रेमानंदजी का मुख्य आंग भक्ति का था और आपकी भक्ति भी इतनी प्रमुख थी कि यथार्थत ही गुण विरिताध्य होता था। उनके बारे में यह कथा है कि प्रेममय भक्ति के कारण उन्हें उन की गाविकाओं ने भी अधिक प्रेममय माना गया था इसलिए उन्हें 'प्रेमस्वत्व' की उपाधि प्रदान की गयी थी।

(६) इस्वदास, इच्छाराम मशहूरवाला की अनुमानत: संवत् 1840 के आसपास इस महाकवि का जन्म जन्मत होता है।

(७) मानवलाल नरोत्तम पतेल के अनुसार प्रेमानंद का जन्मकाल संवत् 1855 रहा होगा।

(८) इसी प्रसंग में कविक्ष्यर दलपतराम के मतानुसार संवत् 1905 में प्रेमानंद की उम्र ७० वर्ष रही होगी।

(९) वैद्य के अनुसार इ.स. 1779 तथा श्री क. मा. मुराशी के अनुसार सं. 1879 में उनका जन्मकाल रहा होगा।

(१०) कवि दलपतराम कहते हैं कि प्रेमानंद की उम्र की उम्र से लगे १९०५ में यदि ७० वर्ष सम्मिलाते जन्म से उम गणना के अनुसार उनका जन्मकाल 1835 होना चाहिए।

उपरोक्त कविताओं के कारण अनेकानेक विचार द्रष्ट्वय होते हैं। परंतु कवि दलपतराम के मत के अनुसार ही प्रेमानंद के जन्म को प्रमाणित स्वीकार किया गया है।
(२१२) श्री हरिदर्शन

श्री हरिदर्शन की मंडली द्वारका जा रही थी। प्रेमानंद की अब इस मंडली के साथ हो जा रही थी। प्रेमानंद जहां और सभी मंडली सदस्य द्वारका की ओर जाने में तपस्या थी, वहाँ प्रेमानंद बालक अपने मन में स्वामिनारायण श्री ज्ञानदासजी के दर्शन के लिए उत्तराला हो रहा था। जिस प्रकार से पायी का यात्रा कांट बची हो उठता है। इसी प्रकार उसका मन प्रभु दर्शनकी ललिता में बची हो रहा था। इस प्रकार इनकी बची देखकर सब मंडली सत्तामसन ने इनके समक्ष भी महाराज श्री जी को एक तमाशा निकाल कर रख दी। जैसे ही प्रेमानंद ने इस मंडली के साथ
आनंद प्राप्त हो गया और इसके भीतर से प्रेम एवं आनंद का स्वरूप फूट निकला।

"आव्या तमारे आश्च जी मेली कुटुंब परिवार।"

हे महाराज जी, मैं आपके आसरे ही अपने बंधु-बांधवों को छोड़कर यहाँ पर आ गया हूँ।

और.......... इस प्रकार तथा कठिन कुटुंब परिवार को ल्याकर वैँधी साहिबुओं का साथ छोड़कर यह युवक ज्ञानदास जी के साथ संवत 1810(इस) 1815 में भावनगर जिले के गढ़डा गाँव में आ पहुँचा।

जीवन सम्पर्क

गढ़डा प्रामकी मेला नदी के किनारे दादा आचारे के दरबार में श्री जी महाराज विराजमान थे। वहाँ पर भी ज्ञानदासजी ने इस वैँधी युवक से नारियल एवं सुपारी की महाराज जी के चरणों में समर्पित करवाई थी। श्री जी महाराज की प्रेमपूर्ण प्रसन्न मुखमुद्रा से इस युवक को अनुमों शान्ति प्राप्त हुई थी। प्रथम दर्शन से प्रभावित मन के भीतर से युवक के उदरार कविता का स्वरूप बनकर फूट पड़ा।

"हूँ तो भट्टका मा लोभाणी।" इस प्रकार आपनी गायनविषय से यह परम प्रभुबत्क कुटक श्री हरी की प्रसन्न करता रहा तथा अभ्यास को संतोष प्राप्त करता रहा। युवक से प्रसन्न हो कर श्री जी महाराज ने अपने बंधु हस्तसे उसके माथे पर चंदन लेते किया, तिलक किया तथा गले में करी बांधकर निजबिनांद नाम प्रदान किया एवं उसे अपने साथ समाज में अपना लिया।

इस प्रकार चारण कीमें उत्पन्न सूपूर्त भ्रान्तिदं बन गया।

इसी प्रकार से विभिन्न तीलों में उत्पन्न बालक भी श्री जी सारण में आकर बाद में प्रभुस्वामी बने। इत्यादि में प्रमुख इस प्रकार है, सैंपी का एक मुखांड स्वामी बना, बड़ई का पुत्र निजबिनांद के नाम से प्रसन्न हुआ। एक और देवीपुत्र (चारण) को देवनांद नाम प्राप्त हुआ। राजमर्द महाशाह हो। माणांदर गणेश पवेंके में महानंद शान्द्र के मधुप नाम की प्रति हुई। इसी प्रकार से श्री जी की कृपा से कृपा अथवा गांवकाँजीता का उत्पन्न बालक निजबिनांद तथा बाद में प्रेमानंद के उच्च आसन पर आसीत हुआ।

कहा जाता है कि आपके प्रिय मनुष्य की ही अधिक परीक्षा ली जाती है। इसके भी जिसे अभिक त्याग करता है। उसको कड़ा से कड़ा समय दिखाता है। एवं के से कड़ा दण्ड भी प्रदान करता है। टीक इसके कहावत के अनुसार प्रेमानंद की कसोटी प्रारंभ से हो सुरु हो गयी थी। गायक का साज गायक का जिज्ञासा होता है। एकतर यहाँ पर स्वामी ने प्रेमानंद का साज ही मांग लिया। साज न रहने से कहाँ का गायक रह सकता है। और तो देना ही पड़ा। अब दो अधिक बात कितने काल की रचना करने पर प्रतिवेदन लगा दिया गया और इसके बाद उनके हाथ में माला थमा दी गयी, और प्रेम स्वामिनारायण का जप करने का आदेश प्रदान किया गया। इसका कारण था कि प्रेमानंद जी संगीत एवं काव्य-चर्चा साधन न होकर केवल प्रेम के गुणगान करनेका साधन मात्र बन जाय। उन पर संगीत का वर्ष न रहे बल्कि प्रेमानंद का वर्ष संगीत पर हो जाये अर्थात यह जिस प्रकार की रचना करना चाहे, कर सकें। संगीत एवं काव्य रचना व्यक्ति की भावना उन पर ही न हो बल्कि उन्हें अपनी हरेख इंद्रियों की भाव संगीतकला एवं गायन रचना पर भी वर्ष हो, प्रेम भुक्त चित्र में यह बात थी कि मनुष्य
के हृदय पर से समस्त पीछली तस्वीरें मिटाकर मन को बोरे कागज बनाकर हो- प्रेमलक्षण भक्ति का प्रमाण रंग बदाया जा सकता है और इसी भाव के वसीबूत हो कर उन्होंने प्रेमान्द के हदय को कांगा कागज बनाकर बाहर और उनकी कस्टी की।

जिस प्रकार बादा भटकनेवाले पंछी को किसी पिंजरे में बंद कर दिया जाये एवं बहुत बोलनेवाले ब्योजक के उपर छुप रहने का अंकुश लगा दिया उसी प्रकार प्रेमान्द के साज और आवाज पर बौद्धिक लगा गया। प्रेमान्द ने भी बिना कोई दौलत किये हुए पूरे आठ मास बिना सांसों के मंदिर वेद का निष्पक्षात्मक स्वाभी के साथ चर्चा में दिन बिता दिये।

श्री जी महाराज के दरबार में प्रेमान्द का प्रवेश

इस प्रकार निजीकोंबाण्ड नाम का यह युवक बिना किसी प्रकार का प्रतिकार किये निपटने में गई। श्री जी महाराज इसके पूरा का आदेश था। एक बार स्वयं महाराजजीने गीत-संगीत की महफ़ौला मूल शरीक था। निजीकोंबाण्ड को उस सांसों बजाने के लिए वाक्य भर दी। अब तक इस युवक का रोम-रोम श्री जी महाराज के प्रेम तंत्र में से सरोकार हो चुका था। अत: सांसों प्राप्त करने के पर्यावर इस श्री जी महाराज का बंदन करने । इतना ही प्रेम रस में डूबा हुआ एक गीत गया- निज़ नोबाण्ड रे प्यार, वंदन देखाड़ो व्हाला।

प्रेम रस से सराबोर होकर इन्होंने अनेक प्रेम भवन भक्ति संगीत को रचना की। इन गद्यांशों में इनके स्वयं के मनोक बंदन का स्निप्ट म्यूज़ था। श्री जी महाराज इन गद्यांशों में बहुत प्रेम-शुभ और दीक्षा अपने गले को माला निकालकर इनके गले में डाल दी। इनकी दिया हुआ नाम निजीकोंबाण्ड की श्री जी का अटपटा सा महसूस हुआ क्योंकि कलाप्रीय होने के कारण इनके निपुल उन्हें किंगी साहिरलियक नाम वर्तमान करने की इच्छा हुई, अतः प्रेम से सराबोर हुए कवि का नाम महाराज जी ने प्रेमान्द के घरेलु कविताओ का संगम प्रेम से आर्द्रतात्मककरनेवाला प्रेमान्द। श्री हरिने हरिभक्ति की सम्भा में भिजिया। ग्रन्थ में प्रेम प्रेम की प्रसंसा करते हुए जाता कि......

(1) उम में तथा जान में बदे मुकाबलों मध्यभूमि भ्रमकों गौर संस्कार में निपुण है।
(2) सिद्धांत निष्पत गोपालांड मुनि भाव-रचना में निपुण है।
(3) कौरनका विधानांद मुनि सासंग-उपासना करते हैं।
(4) सिद्धांत निष्पत मध्यभूमि निपुण है अत: चित्रभारता से भ्रमकों अभिध्वस्त करने है।
(5) सोजेत्तयुति गुणावतारांद महाराज श्री जी अस्तिनंद संपा करते हैं।
(6) इस प्रकार से अनेक परमहंस इस दरबार में प्रतिभात है। इसी दरबार में प्रेम से आर्द्रत धर्म-भक्ति प्रेमान्द का स्वागत किया गया। एवं कहा गया कि अब यह प्रेमलक्षण भक्ति का प्रभाव का मूलक हुआ से इसके सुरूये गीत-संगीत से प्रेम भक्ति का प्रचार करो।

प्रेमान्द के भक्ति पदों, उनका सुप्रभ कंट, उनका आहलाद, उनका ममाल, उनकी ममालंग, उनकी भ्रमकों मार भ्रमुक भिजिया। प्रभु मिलनके प्रति उनके हदयका तीर्थ दर्द मानो प्रेमान्द के व्यक्तित्व एवं आकार रोशन से चला गया।
प्रेमानंद के भक्तिपूर्ण स्वभाव एवं प्रभु के प्रति उनके प्रेम के कारण स्वामी सहजानंदजी ने उनके प्रति इस प्रकार शब्दों की भ्रामाजली प्रदान की है।

"स्वामी प्रेमानंद ध्यान में मगन होकर प्रभु लीन गरबी का गायन गा रहे थे।" बहु सहजानंद रसरूप अनुपम सार ने तोल...? (१)

इसको सुनकर श्रीजी महाराजने कहा कि इतना सुंदर कौरत्न गाकर प्रभुलीन है, जिसके मन में

"इस प्रकार से भगवान की मूर्ति की चित्तवन है
उस साधु को तो सास्तां दंडवतु प्रणाम करना चाहिए" (२)

ज्ञन धर्मांतु कोई कारण उत्पन नहीं करने पर संतता मध्यमा ज्ञन, धर्मा एम ज ईस्च्छय छिये। अने जें में ए कौरत्नमां बिन्दु एवं रीतुं चिन्ततत धर्मा होखे तो तो कारण ने मायाना पाश धरी छोटा मुताया है। अने जें में में एक पुरूष ज्ञन धर्मा तेना मां-बाय पर सुतृत धर्मा जामा.... अने स्त्री पुजा ने प्रभुमार्टिक पदार्थ ते तो पाण आया
ब्रह्मवेता संता संग ने श्री वासुदेव भगवान्तु सास्ताक्षार दर्शना ने चित्तवन ते तो अतिश दुर्लभ है।

इस प्रकार प्रेमानंद के भक्तिपूर्ण पदों के कौरत्न ने उनें साधु दत के प्रमुख संपादन पर लक्ष किया
दिया। इसी कारण उनें 'भगवाननेकालिक भक्त' एवं सर्वे हरी भक्ति मां आदि की उपाधि से विभूषित किया
गया। मनुष्य के कार्य का ही स्रोत है जिसके सहारे यह स्वयं की इस भूमिक प्रसार में जीवित रख पाता है।

स्वामी प्रेमानंद आज भी अपने सुमुख भक्ति पदों से भक्तोंके मन में विराजमान है। उनकी सांसारिक
देश सनू १८५५ में पंचभूतों में विलीन है, गयीं लेकिन उनका काय शरणात्मक, उनकी भक्ति, उनका मानिक
साहित्य आज भी अभार है। जिस मनुष्य को साधु-कुल का इतना सुंदर प्रमाण प्राप्त हो चुका हो उनकी जाति
कुल ऊंची हो अथवा नीची, उसका पूर्ण नाम, ज्ञन स्थल, माता-पिता यानि उसका सर्वथा भी यदि असात के
अंधकार में डूबा हुआ हो तो वह फरक पड़ता है। मनुष्य का जात यदि रोशन हो तो कल तो स्वयंमेव हो रोशनी
से भरपूर हो उठता है। आज का किया हुआ कल के लिए पारितोषिक सिद्ध होता है। कृप्या के के लिए तो कृप्या
पद की हो महत्ता होती है। अपने कृप्या-पद के लिए हो वह वंदना का पाठ होता है। अपने पूर्वजीवन में यह\nवह अज्ञात के अंधेरों से दलो रहा है तब भी वर्तमान की गरिमा को कोई नहीं सकता है।

— विचारपूर्ण समय (२)
— प्रेमसाती पदावली (२०)
(२१२०) प्रेमानंद कृतित्व

जब प्रेमानंद स्वामी ने भी सहजानंद स्वामी के पास से साधुकी दीक्षा प्राप्त की उस समय अनुमानतः उनकी आयु लगभग तीस जी मानी जा सकती है। दीक्षा प्रदान करने के उपरांत सहजानंद स्वामिजी ने उनका संगीत-प्रेम देखकर उन्हें गुजरात में बाहर चलना अंतिम संगीत की यथविषय संगीत साधना के लिए भेजा। संगीत की शिक्षा प्राप्त कर वापिस आकर जब सहजानंदजी को प्रेमाण और निदेश के अनुसार उन्होंने काव्यसंबन्ध रागसांग किया होगा उस उनकी आयु लगभग पैकीस वर्ष मानी जा सकती है। 'न यदि उनकी अवसंय संभ वर्ष १८०५ स्वीकार की जाता है तब यह मानना होगा कि उनकी उम्र उस समय मध्यम दर्ज ही होगी। इस प्रकार उनका काव्य-सर्जन काव्य कम से कम सात तीन दशक अवसंय ही रहा होगा। '१ इस आस्मन में प्रेमानंद का साहित्य प्रगत हुआ वह विपुल है।' गुजराती लोकपति प्रेमानंद काव्य के दो भाग तथा काव्य दोहेन भाग ३ में तुलसी विवाह के ६५ तथा भाग ६ में इस साधू कविका ग्रंथ पद जो प्राप्त है उनकी कुल संख्या लगभग ५ हजार है। इस प्रकार इसके कुल संख्या १० से १२ हजार मानी जा सकती है।' (१) (उपरोक्त स्व. मणकाशायी से अपने शब्दों में)

परंतु स्वामीजी के पद रचनाएँ पांच लिखित पुस्तकों प्राप्त होती हैं जिन में पदों का संख्या में आंकदं दिधिगीर समय बनी होती है। प्रेमानंद, स्वामी के इस विपुल काव्य सर्जन में तुलसी विवाह, एकदानी आर्यानाथ सत्यभामा की नाराजगी आदि कथात्मक कृतियों भी हैं, 'दान-लीला' जैसे संवाद काव्य है, भक्ति चंबल खृष्ण-ब्रह्मण के पद हैं, श्रीकृष्णका बाल-लीला के पद हैं। श्री सहजानंद स्वामी के चरित्र के द्वारा कविताओं के तथा विषय के पद हैं। यह समावेश के पद हैं गोपियों की प्रेम लक्षण भक्ति के अनेक भागों के बहुत से पद हैं। स्वामिनारायण संप्रदाय के संस्कृतियों के लक्षण, करत्त्य, दीक्षा आदि के तथा बाल, तिथि, महाना आदि तथा आती आदि के पद हैं। यह सब देखकर हुए स्वामीजी को कविका विष्णुराज पद-भाव की ट्री को गच्छ होने पर डुबू जाता है। अधिकारण पदों में, इसमें भी अक्षर मेल करते हुए माता मेल और उसमें भी अधिक भूम मेल अर्थात पद रूप में लिखा गया है।

कथात्मक कृतियों में पद-रूप में लिखी गयी है तथा उन्हें एक माला में यूपसे लेखा किया गया है। पद कविता पूर्व शात में भी पहले शुरू हो चुकी थी। इस प्रवाह में १५२० तथा १६४० शतक में नानिंद मंदिर, मालानंद तथा मोहिनुका की जीवन पर बहुत निश्चय आया। १७५० तथा १८५० शतक में जन राम प्रेम के तथा जैनतार आदि एक विषय बना रही है। इसके पश्चात १८०० तथा १९०० के शतक में एक बंग उमड़ो पदा। इसमें गुजराती साहित्य के अभ्यासी भी प्राप्त परिचत थे।

राज, राणे, रणकुंभ, रामकृष्ण, धोमण, रघुनाथ, शंविदाम, रविदाम, मोरामारी, भोजी, निरोध, गंगानंद, आदि कवियों को भाव स्वामिनारायण संप्रदाय के कवि वंद का योगदान भी काफी महत्त्वपूर्ण एवं निराकार है। इसमें भी कवि प्रेमानंद स्वामी को विष्णुराज पद अधिकता है। क्योंकि उनकी भक्ति पद कविताओं में विश्वसनीय संगीत होने के कारण और भी अधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभाववालाकी है। 'प्रेमानंद काव्य' के दोनों भागों में पद के पद का ग्रामनालक अनुक्रमणिका जो दी गयी है उन पर से सप्तसुर, लोकगीत, आलाप, ताल मान, आदि संगीत

१. अप्रकट हरि चरितामृत सागर (सिंहालमुक्त) प्र० पृ. २
(१७)
के पारिभाषिक शब्द तथा इसके साथ ही पदसंचय में के १९२, १९२, १९६ आदि अनेक पदों में वृद्धि की नतियाँकृत नादातुला का लिखित शब्द में अनुसरती अभिव्यक्ति सभी पदों को रचना संगीत तथा गेरता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

"युमि-युमि बाबत बुंदेन, थार, थार, थार तातक थीकाना थान"

"बाबत परसाम उपजत अनेक रोंग, देहत, बेहत बोलत तथा
नवत नवल नंदलाल बाबत तरूण
नुपुर खन न न न न तन न न तन लेत।"

उपरोक्त पद का पहले ही स्पष्ट हो जाता है कि यह शास्त्रीय संगीत से अनुप्राप्त है। भक्त कवियों की शुरुआत में अनेक कवि आते हैं या कहे कि भारत में भक्त कवियों की शुरुआत बहुत लम्बी है, इसमें किसी भी भाषा, प्रदेश को लिया जा सकता है परंतु इस प्रकार से कविता अथवा भक्ति पदों को शास्त्रीय तात्त्व तथा अतिकृत करने वाले कवियों का नाम तो अनुगूटी पर गिना जा सकता है।

पदों का कवन- विषय, रीति तथा काव्य स्वरूप के बारे में तो प्रेमानंद स्वामीने गुजराती कविताके नरसिंह महेता के समय की अपने समय तर चली आती हैं परंतु परामर्श का अनुसरण किया है।

प्रेमानंद स्वामीय यूं तो गुजराती के समस्त बालावहरण से स्वाभाविक रूप में प्रभावित हो। परंतु उनके पदों को पढ़कर सुखद आराध्य की अनुभूति होती है। उनके पदों में हिंदी के पदों की संख्या इतनी अधिक है कि उनके किसी ज्ञन के बारे में जानकर रोमांच हो आता है। भौमतम में भीरा, मालूम, अखी, शामक, मालयार साहित्य, बिरनियांस, प्राकृत, निर्मल, धीमोभूज, द्राक्षर, आदि संस्कृत शब्दों ने भी गुजराती के साथ हिंदी में साहित्य लेखन किया है। इस काल के हिंदी साहित्य पर दिरुपित करने से ज्ञन होता है कि हम स्वायत्त के प्रजासत्तात राष्ट्रीय भाषा की वात करते हैं और वह भी केवल बाल तक ही होता है जब कि गुजरात अहिंदी प्रदेश हों और वाजापुर भी सूकें वर्णों से हिंदी के प्रति असम्मुख प्रेम एवं लगात तथा भरपूर रहा है। यदि यह चाहे कि गुजरात में हिंदी राष्ट्रीय भाषा लाभ करने से प्राय साधनीय हो तो अनुशंसा न होगा। प्रेमानंद तथा प्रेमानंद स्वामीने अपनी कविताओं में जो हिंदीका प्रयोग किया है वह स्वारस्कर्त रूप में आये आनेवाले समय तक चलता रहा है। यह परसार कवि दशपालम का अपनी साहित्यिक चरित्र रचना होता है। प्रेमानंद स्वामी का हिंदी भाषा पर गुजराती भाषा जितना ही सुदर अभिव्यक्त करने का होता है। अत्यंत अधिकार अद्वैताचार्य्य ने परमानंद स्वामीने अपनी समर्थ प्राप्त होती है। पद मध्यम में वह लगना समाप्त हो भाषा का सही और मधुर प्रयोग करते हैं कि उनकी ओर ज्ञन स्वयं हो भी हुजों जाता है, उनकी नवाहित संगीत प्रवृत्तियां में मानी होती, सूरदास तथा ब्रज भाषा के अन्य कवियों की रचनाओं का बहुत समेत का संक्रमण महसूस किया जा सकता है।

उनके हिंदी भक्तिकाली लेखन में स्वतः ही मानो ब्रज भाषा के शब्द उनकी पकड़ में आ जाता है। ब्रज भाषा के अन्तर्क्षल राजस्थानी बोली के शब्द भी दृष्ट हैं।

१. प्रेमानंद स्वामी ने कृष्ण बाललीला पृ - ३४. पद १९१२
“प्यारा लागे होनी नंदजी रा लाल, 
थारे लाख में तो बंसी हाँ, 
में तो शेला भारा चरणारी दासी 
थे मारा प्राणगोपाल 
नंदरा कुंवर थे तो हार दियारा, ब्वाला मान बालमारा 
प्रेमानंद रा प्यारा नोगरा तारा रसिया रूप रसाले।” (१)

उपरोक्त पद में स्पष्ट शब्द नंदीरा लाला थारे जीवं भारी चाल आदि तथा चरणारी दासी जैसे सजीव शब्दों का चित्रण किया गया है। इसके अतिरिक्त नेण्डरा तारा का प्रयोग इतनी सजीवता से और सहजता से किया गया है कि पाठया या श्रद्धा को पद की वास्तविक भाषा में भ्रम होता है।

कहाँ कहाँ पंजाबी भाषा की बौतचाल के शब्द इतने मुख्यित हो उठते हैं कि पद की समस्त मिलनी जुली भाषा एक रस हो उठती है।

“सैयां बोमे लग गई नें दोसन सुंदर श्याम से बोमे मरेके दस के बजाई बने” (२)

इस में नें दो सेन में पंजाबी भाषा की छोटी विभक्ति के प्रत्यक्ष को छोटी खुशी के साथ प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमानंद स्वामी के साहित्य में केवल हिंदी व पंजाबी ही नहीं बल्कि फारसी, उर्दू के शब्दों का भी वेदांक प्रयोग दृष्टिव्य होता है। आशक, मायूक सलसीर, खाबिंद दिल, खुशी, परदरदिगा, गुजरा, मुनकारी आदि शब्दों का भी भरपूर प्रयोग किया सहज है।

“सैयार काय सांगु की आता कुड़े गेले पहाँता-पाहता 
कुड़े गेले न जाने कुनी जाता, माम्बे संगगाता संग गाता”
राजस्थानी का बड़ा साज प्रयोग देखिये ।

“प्रभुजी एम तो थाली दासी ठाकूर दासी मां जीत दासी, प्रेम सबसे कटे लगामी, आप मिलो बनवसे बनवसी”

प्रेमानंदजी हिंदी भाषा में गुजराती एवं गुजराती भाषामें हिंदी का प्रयोग करने केवल भाषा का शब्द नहीं करते रहे हैं बल्कि साहित्य, उनका लेखन सभी भाषाओं को एक साथ आत्मसात करने की भरपूर दृष्टि में है।

एक कविके रूप में प्रेमानंद स्वामी की अन्य कवियों से इस प्रकार विश्लेषित होगा?

१. प्रेमसखी पदावली - प्रेमलक्षण पदावली - पद - नं. २०४. पृ. ७६
२. प्रेमसखी पदावली - प्रेमलक्षण पदावली - पद - नं. २०५. पृ. ७६
राग - साहित्यियों के साहित्य संगीत का प्राथमिक
साहित्य में एक से अधिक भाषाओं का प्रभाव।

उनके साहित्य पर हिंदी भाषा के साहित्य का तो इतना अधिक प्रभाव है कि यदि उनका हिंदी साहित्य प्रकाशित कराकर हिंदी भाषा प्रदेशों में प्रचारित किया जाय तो इसमें कोई संसार नहीं कि हिंदी भाषा के मध्यकालीन कवियों में उन्हें श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा।

विषय और वस्तु की दृष्टि से प्रेमानंद जी की कविता का विषय एक विशिष्ट संस्कार ग्राम स्वामित्वाधीन संसदाय के इस्त आराध्य देव भी सहजांत्रिक स्वामित्व की सलाह पर ही आधारित है। उनकी कविता मध्यकालीन भक्ति कविता के प्रमुख प्रकार के अनुकूल है। कवि के आराध्य देव के विभिन्न प्रसंग, ज्यादातर, प्रम आदि से भाव। विभिन्न कवि आत्मसोनों होकर उनके प्रेरण से सरोवर हो उठाना है और उनकी कविता अपने आलोचक देख के विभिन्न पहलुओं को छूने लगती है।

(२:९:२:१) भक्ति बोधकी कविता
भक्ति बोधकी कविता में कवि की उपदेश प्राप्त कविताओं का समक्षान है। वे कविताएं सांप्रदायिक चूँत्र अोड़ हुए टूटते होते हैं।

इसमें सत्संगी वेदभक्ति के लक्षण दीक्षाविधि, वैष्णववाद श्रीकर्मण्य के लक्षण हरिभक्ति के आनाम में अपने के नियम उच्चार मान की नीति आदि संबंधी पद आते है। कवियों की दृष्टि से इन पदों में आधिक ध्यान केन्द्रित नहीं हो पाता। कवि ने अपने इतिहास के मुख से उच्चारित वाणी की कविता वास्तव प्रकट मिलते रुपम मानों का पहुंचाने का प्रयास किया है। प्रेमानंद्वामी अपने इस्त देव के प्रेरण में अपने मान है कि अपना आत्मा पुरुष मैं है। उनके मुखसे उद्घाटन निकलते है।

रे स्वभव द्राई शामिलमायो।
लहे छे प्राण जीवन पार्लामायो। "१

गर्भी में गायत्री वाक्य जानेवाल उनका यह पद ग्रंथ में प्रेमानंद के संग की कल्याण मीमा है।

इस भक्तसृष्टि से चुटकुटे का उपाय को केवल परमात्मा की भक्ति ही है। इसमें चुटकुट ही परमात्मा की प्राप्त किया जा सकता है।

अनेक धर्मों में मुक्ति का उपाय भक्ति ही बतायी गयी है। परंपरण प्राणी को उठाकर देखें कि इस होता है कि भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचने के परमात्मा ही भक्त इस देव से मुक्त हो जा रहा है। फुलका, निवास हार हार का मानो उसके लिए सहज हो जाता है। यह प्रभु के प्रति की आस्था की क्रमसृजन है। कवि अंगी छलनी निहारता है कि उसे चाहए और केवल वहीं... कविता एक ही तरसार प्राप्त हो गया है।

१ प्रेमानंदी पदावली भक्तवस्त्र पृ. १
अंधे खोलकर पलक मुदकर हर क्षण वह केवल अपने इस्तेमाल के ही ध्यान में निम्नलिखित है तथा प्रभू मिलन की चर्मस्वास्थ्य को पुनःच जाता है। उसके इद्द से अपने प्रयुक्त पुरुष के प्रति कोमल भाव उत्पन्न हो उठते है और वाणी पुकार उठती है।

"हो में तो तेरे द्वारे जोनहोई आऊंगी मया, दरस की भीख के जाऊंगी मायो रे। शैल की शैली संगोशी की मुद्रा, त्याग का तबलता बजाऊंगी मायो रे..." १

उपरोक्त पद में हिंदी का कितना स्पष्ट प्रयोग प्रदर्शित होता है। भक्ति भाव के इस प्रकार के पद अत्यंत सहज तथा सजीव प्रतिविम्बित होते हैं, इसके अतिरिक्त आपके भक्ति - प्रधान पदों में जीवन की माया चलन धर्म, जन्म-मरण, स्वार्थ, संबंध जीवन की क्षणिकांगुरता, अर्यमभाली युतु आदि पर उपदेशात्मकता आदि है।

"छतासा नीर का इटा, पात ब्यू दारा ते हड़ो।" २

इस प्रकार दृसरा ----

"यह संसार दूसरा सेवा को फली रहें हों परे, देखत ही उठ जाय आई होय प्राप्त कुछ न होय रे।" ३

इस प्रकार से त्यक्ति प्रेमान्द जी ने अपने भक्ति पदों में तरह-तरह की उपयोग से मनुष्य के चेतन करनेका प्रयास किया है।

( २:२२:२२ ) भक्ति कवि के प्रारंभिक पद

भारत के अनेक भक्त-कवियों ने अपने भक्ति रस के पदों के लिए विश्व प्रसिद्ध प्राप्त की है। इन भक्ति पदों को भिन्नता प्रभु के प्रति समर्पण की भावभूमि पर, आधारित रहती है। वह समर्पण इतना गहन, इतना फिर न है कि बेड़ा है, वह इतना अधिक प्रभुभूषाय हो उठता है कि उसका अपना शाक्ति भी नहीं रह जाता वह जो कुछ भी है प्रभु का। प्रभु का बालक प्रभु का दास, प्रभु का सज्जन, प्रभु स्वनी, मौत जो कुछ भी है वह केवल रस से ही ओल प्राप्त है। इन पदों में कहीं भेराकरां है तो कहीं अपने को दीन समझनेको यह है, कहीं इसका महसुस के रूप में है तो कहीं पत्र है। इससे भी उपर जा कर पदों में दर्शन तत्ता आ जाना कवि को खुले है। इन पदों में ज्ञन, वेशार्थ तथा भक्ति के उपदेश विद्यमान है अतः इनमें रस का विशाल स्तम्भ नहीं मिल पाता।

कविता कथन के बजाय भवदर्शन में अधिक दृष्टि रहती है। भक्ति कवि भाव दर्शन की प्रमाण के लिए अधकारात्मक प्रारंभिक भक्ति को अपनाते है। प्रेमान्द भी एक भक्ति कवि हैं और इस्तीफे उपलब्ध हैं।

1. प्रेमअभिषेक पदावली - भक्ति बोध - पद ७ पृ ३
2. प्रेमअभिषेक पदावली भक्ति बोध - पद ६
3. प्रेमअभिषेक पदावली भक्ति बोध - पद ७
की प्रारंभना लेखन की ओर ही अधिक प्रतित होती है।

"जय-जय-जयदेव, जय जन सुख कारी" जैसी आरती से लेकर प्रभु की ब्रम्हांड लीला तथा ब्रम्हांड
निवास आदि तक के हद-सम्म पद उनकी लेखनी से प्राप्त हुए हैं। भक्तिवाचार्य में ज्ञृति उनकी आभा से
निकलते उनकी आवाज --

'है रसिया में तो सक्षा तिहारी ' या फिर हम तो हरि जू तोरे शरत पर या ओ जी मोरे मांगरे संगीत
मोत.... आदि पदों में उनकी गुण-हीनता, दीनता पतितता, तथा प्रभु की पतितपावनता तथा शरणागत असमान
को समक्ष रख कर प्रभु की शरण उनका आसा कृपा द्रॿष्टि तथा करणा द्रॿष्टि प्राप्त करना ही काल का अर्थ
है।

( १२-२-२३ ) कृष्ण कीर्तन

भगवान श्रीकृष्ण के बारे में भारत के अनेक कवियों ने अपनी अलंकार दृष्टि के अनुसार लिखा है।
श्रीकृष्ण जी बाललीला, रासलीला तथा प्रेमस्घरण के बारे में वचनों से जयदेव विद्यापित नरसिंह मोरता, मुखर्जी
तथा मोराल जैसे भक्त कवियों की लेखनी चली है। प्रेमांनि स्वामी भी कृष्ण कीर्तन की भाग्य कि कृष्ण
लीला ने भक्तों को कवि बनाया है। संदेह: इसका भाव पद है कि कृष्ण लीला से प्रतिगत हो का कृष्ण भक्तों
के मन में जो भावनाभाव हुई उससे उनमें कवित्व एवं रचना के लिए उम्मेद उत्पन्न हुई जिसमें कवियों एवं
संगीतकारों को प्रेरक सामग्री प्राप्त हो सकी।

"काहा बिन गाना नहिं " इस उक्ति की मध्य काल में आज तक का संगीत विनाय तथा संगीत
विलाय प्रभावित है प्रेमांनि स्वामी भी अपनी भक्ति एवं कवित्व के लिए श्रीकृष्ण के सकारात्मक
परंपरा से जुड़े हुए हैं। यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

प्रभात पद

मध्यकालीन साहित्य पर दृष्टिपत्र करने में ज्ञान होता है कि वेण्ण भक्त-कवियों ने प्रभात पद का काफी मात्रा में लिखा है। प्रेमांनि स्वामी का भी सम्प्रय कृष्ण कीर्तन के नंद-नंदन का बनाने के पद का प्रयोग
रहा है। इस प्रकार के पदों में नंद-नंदन लाल-छबीले, श्याम, सांतर, पदुनंदन, आदि का प्रयोग हुआ है। प्रेमांनि
स्वामी के प्रभात पद संगतापुराण रचना है। उनमें साहित्यिक शब्दों का भरपूर प्रयोग मिलता है।

"गुजान भरान कमल दल ऊपर,
बोलत कोआ आए।
जागो लल छबीले गमन
भो भरो मोरे प्यारे।" १

उपरोक्त प्रकार की माधुर्यपूर्ण पदवली हमारी अत: कविदेव में गृजिति रहती है। इस पद के यथा

१ प्रेमांनि स्वामी प्रभात पद पु. १५ पद ४४
पदों में कृष्ण मुख के दर्शन करने की उपक्रमा भरी, आत्मत्व भरी प्राप्तना की स्पष्ट छाप लक्षित होती है।

(२१२२४) कृष्णरूप - माधुरी का गान

प्रभात बरन तथा कृष्ण प्रभुके के पदों के मुखाल्ते प्रेमानंदजी ने कृष्ण भगवान के रूप-सादृश्य का एवं शोभा सुगंग के गान के पदों पर ही अधिकारी लेखनी चलाया है। अल्पता की उपासना के ज्ञान तथा योग के बारे में परमेश्वर का साक्षात रूप अथवा मूर्ति रूप की उपासना करने से भक्तों की अधिक संतुष्ट रुप प्राप्त होती है। प्रेमानंद स्वामी एवं उनके बहुत से शिष्यों ने सहजात्मक स्वामी को प्रत्यक्ष भगवान मानकर ही पूजा है और उनके उपासना बंधन की है। उनकी लीला का वर्णन करके कवि गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए है। प्रेमानंद स्वामी अपने प्रिय को उपासना करने के ब्रज गोपी की दृष्टि से कृष्ण के मुख, नयन, चन्दन चाल, रंगालंकामाधि को निखरते हैं और उनमें लीला हो कर भविष्य योग में मस्त हो जाते हैं।

"माई री रसिक सरीले नैन इस बरसत सेना रस भरे नैना बोलत रण्य।
रसिक बिहारी लाल, रसिकी चलत - चाल......" ¹

इस प्रकार प्रेमानंद स्वामी के अनेकों पद कृष्ण रूप की माधुरी का गान करने करते नहीं अबकर।
कृष्णकी रूप माधुरी से लेकर राधा की आत्मितानी राधा की छवि राधा का प्यार, समर्पण तथा गधा रण्य की मनमोहक छवि आदि का वर्णन कविके पदों में रूप - माधुरी बनकर समर्पण या, रंगह, तल्लीनाया, उदेन देना है। अपने प्रिय का नवनयिनासम झंडीय हरिकर जन्मी अिहल हो उठता है और उसके मन में कविता निखर कर लेखनी में समा जाती है।

(२१२५) कृष्ण बाल-लीला

कृष्ण लीला संकीर्तन के बहुत से पद कृष्ण के गोकुल की ब्रज की बाल-लीला पर आधारित है। उन पदों में कृष्ण के बाल रूप के शक्तिशाली रूप का वर्णन अजासुर अमुरो का नाश, कालिनाग का मरन, दावनतान के रूप में किया गया है। इसमें अतिरिक्त कृष्ण के बाल रूप की स्तराट्टी पर भी काफी नामात और बहुत से पद लिखे गये हैं। जिसमें माता का जूनार, गोपियों का सताना, मटकी फोड़ना, आदि विशेष रूप से ब्रज के बाल व्यक्ति के पद बड़ी सशक्तता से विचि गये हैं। मां के साथ तो प्रेमी बालक लड़ाई-झगड़ा है, एक रूप ही होती है बालक से नाराज होती है, उसे पीटी ओर फिर उसके आंखू भी पीटहै और अंत में उस मां का नाम कविता अपनी मां के आंचल में पुंग छिपा लेता है, फिर मां से सिकायत का सिलसिला शुरू होता है। वह तो ओर्त भी भी भयान है, मां बेटे के स्थे ओर ममता की। यहां मां है यमोदा और मां का लाइटा बेटे गंगुल विश्व का पूर्ण है पर उसके साथ ही साथ लाइटा भी है। कृष्ण कहां रोककर चुप रहने वाले बालकृष्ण है, जहा तो मां पर बिगड होते ही पड़ते है और गोपिया इतनी सतायी जाने पर भी उनकी ही तरफ़दारी करती है।

"बहुत बहुत तुम बसों, माई
तनाक ही के कारण मुख के बालकृष्ण एकदा नृत्य जोशी तरी, तो पर इतनी कहा कहिए।" ²

¹ कृष्ण रूप माधुरी पद-५५ पृ-२८ ² कृष्ण बाललीला पद-५८ पृ-२७
(२१२२८) रास तथा दानलीला

कृष्ण के बाल रूप की सारतबर्य एवं कार्यकलापों के अतिरिक्त उनके रास और गोपियों से नौक़ा, श्लोक, होंस-परिहार, का वर्णन भी अधिकांशतः कृष्ण कथा साहित्य के रचनात्मक कवियों ने किया है। रास में संगीत एवं नृत्य दोनों ही का आनंद प्राप्त होता है। अतः इसमें संगीत के ज्ञान का बड़ा महत्व है। अपने संगीत ज्ञान के द्वारा कवि अपने सहित्य को एक मनोहरी वातावरण प्रदान करते हैं। हमें ज्ञात है कि प्रेमानंद ने संगीत की शिक्षा ली अतः स्वर्णबलक रूप से उनका संगीत ज्ञान आम कवि से उच्च कोटि का हुआ। वैसे भी शिलादेव के अतिरिक्त प्रेमानंद का अपना संगीतमय मस्तिष्क और दिल उनकी कविता में नाराज बन लगा है। उनके पदों में ‘चूम चूम चूम’ ‘मानना का पूर्णाद’ तथा ‘चूम जलन चूम जलन’ का पुनरुत्थल संगीत तथा ‘चूम चूम’ आदि गुंडां की गत तत्त्व तथा आदि का सूदर व प्रयोग लाने का महत्ता प्रदान करता है और सुंदर लाले के समक्ष मानो साकार हो उठता है।

(२१२२७) गोपी भावों का ज्ञान

प्रेमानंद स्वामी की विशेष भक्ति कविता ब्रज की गोपियों की प्रेम लक्षण भक्ति के विवरण आयामों में बड़ी खुबसूरत के साथ प्रगट होती है। इतनी कविता शृंगार भक्ति या कहे तो भक्ति शृंगार की कविता के रूप में सकार हो उठती है। एक कवि के लिए गोपीभाव में इतनी उल्लक्तता एवं सुंदरता से कविता का लेखन मानने वहत सहज एवं निराल हो जाता है। यदि हमे मीराबाई जैसी किशोरी कवियता के भक्ति-साहित्य की जाति के तो आसानों से कहा जा सकता है की नाराज स्वर्णबलक से मन्त्रालयी सरस्मरी होती है, वह ज्ञात है सो दोहा लिखने को आदि है। पीठा से ही प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम का नवीकरण होता है। अपने भीतर प्रेम वेदना महसूस कर किसी की जन्म देना मांगे ने वह पीठा भोग कर कृष्ण के प्रेम आता अनुभवार्थक होकर भक्ति साहित्य की जन्म दिया। परंतु एक पुरुष भक्ति जन्म दाँती न होने के बावजूद भी उस पीठा को भोग गया, क्यों तो बड़े सुखद आस्वर्य का विषय है। प्रेमानंद उस प्रेम का रह से गुजरें है। पुरुष होकर भी उनकी गोपी भावों को महसूस किया उस पीठा का रसायनिक खिंचवाया और तब अपने अपने गोपीभाव के भक्ति साहित्य की जन्म दिया।

वैसे तो अन्य कई कवियों ने भगवान के लिए अपने प्रेम का लोक कर उनकी दायित्वीय आदि का आवरण पहना है, प्रेमस्वरूप उनकी कविताओं की विचरण में गम्भीरता होती है। संभावनातः भगवान की पुजा करने दुसरा पुरुष कवि की जन्म अंतर तब प्रेम के घरे मानने तक नहीं लेता है। इस भक्ति में चित्र व्यक्तित्व, दर्शनों की लालसा, भक्ति की उलटकटा और आनंदलीला महसूलित है।

गोपियों की कृष्णनृत्य तथा उनके भीतर भीतर अनुभवों का बहुभाव गोपियों के उद्देश्य रूप में यह है: प्रेमानंद-स्वामी द्वारा लिखित सौभागी पदों के काव्य प्रभाव के द्वारा से दयालु के एसे पदों व गीतों का पात्रतांतिकभाव फिर जा सकता है।
(४४)

"सांवरियों जो एक देखूँ भरी नैर,
प्राण जीवन सुख देन।
जनम सफल जियतू ही जनु,
सुनिहु कमल मुख चैन।" (१)

के पदों का कवि ने इतना रससिमात्र और आत्मविभोरावस्था में लिखा है कि उन्हें पढ़कर पाठक भरे हो। उन के पदों में श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग और वियोग उलझाय होकर आता का अंतर मन माने पाठक के समय खोलकर रख देते है।

"तेरे बिना पियरा जियरा निकसो जाय
मदन निशाचर देत महादुःख
तुम बिन येरे निर्द्वृत्त राय" (२)

प्रेमिता का मन अपने प्रिय की व्यक्तिता में इतनी तीव्र बदना से आच्छादित है कि मानी समाज कलेजा केंद्र को आ जाता है।

"जियरा निकसो जाय" का अवधूत प्रयोग समय आता है।

"मोरे ही आंगनबा आय के कोंच शब्द सुनाये रे.......
होत सुगुन शुभ मन भावन 'भानु आज पियरा पर आवे रे...." (३)

इस प्रकार शृंगार के दोनों पक्षों को बड़े तिथिसार पूर्वक माहित्य में उतारा है। अपने गीत के रचनामयता से कवि ने कृष्ण प्रति दर्शन, आकर्षण, समर्पण, दर्शन के प्रति मिलन की उत्सुकता दर्शाई, व्याख्या आदि विविध अनुभवों से उतारा मानो वे सभी उनके स्वयं के अनुभव गहरे हीं।

कन्हैयालाल मुर्सिके शब्दों में :-

"भक्ति साहित्य की इमारत से इस पौंड में प्रेमांतर म्याटो (लगभग व १६८५ में १६८५) देखें दो कवि हैं। इतना ही नहीं वरना यहिं भक्ति के बाद के मध्यकाल के माहित्य में किसी के को जड़ों में हूँ। भक्ति की ओर चढ़ दिखाई देता है तो वह इतने ही है...... कवि मे कलात्मक उपदेश देकर होती है। "

इनकी अंग्रेजी पुस्तक Gujarat and its literature में इसी प्रकार का अभिव्यक्ति मथिराय दिया है।

Their principal works were either padas or garabis in beauty of language

1. भक्ति विलाम - प्रेमांतर काव्य (प्रथम भाग) पद ५२९ पृ १४९
2. प्रेमवस्त्रण पदावली - प्रेमसाहल पद २३३, पृ ५९
3. प्रेमवस्त्रण पदावली - प्रेमसाहल पद २४४, पृ ६२
4. भोड़क कसन दर्शन - पृ २३२
Brabunananal surpasses all his counterprearies except Dayaram a poet of a high order perhaps the only one between Narsing and Dayaram who sang with a passionate intensity loting rich. With the impulse of Bhatre. Like Narsing he self himself a gopi of krishna, but as embodial in Sahajanand it was that he recived the nick name of sakhi a lewale Briend Despite the monotong largely in heart in subject there is some artistic and imaginative beauty in his verse." (1)

(2:2:2:8) कृष्ण विरह की कविता
कृष्ण की बात चेष्या उनकी सुलोचन मुखलिपि के नित्य दर्शन के लिए लालापित हदय, रामलिला। 'से उपरोक्त विषयो यो लिखा जाता रहा है। कृष्ण को स्पर्श करने की लालसा, विहवलता, कृष्ण का बन चोड़ कर मधुरा चले जाना और गोपियों की विरह दशा आदि इतने द्रष्टांत और विषय है जिन पर वैष्णव कवियों ने अपनी कलम चलायी है। सेंकड़ो वर्षो प्रेमांद्र स्वामी ने भी इस प्रकार के विरह पर गोपियों द्वारा वर्णन किया है। कृष्ण कर अकुर के साथ मधुरा जाते हैं, उसका वर्णन भी कवि ने बढ़ी जिंदाबादी के साथ किया है। अकुर को पद रूप में गोपियों द्वारा खुब भला चुप कहा गया है। उसे ‘लपटी’ कहकर संज्ञाविभिन्न किया है, उनके लिए के परमुत तो ब्रज की नार, गोकुलमासी, भेंट चढ़े बन के पथु, पश्चि, वृक्ष, बलबटे सभी मानों विषयों में कराक उठते हैं और कृष्ण से वाँचिय सोत आने की प्रार्थना करते हैं।

"रे मोहन मिल जाओ रे एक बेह " (2)
और विरही गोपियों की व्याकुलता सहज ही प्रस्नुत हो उठती है --
निषुपता नाथ भरी तुम बहुत अमृत पाई जिज्ञायें अबत्रू, अव विष के जियो में ते। (3)

अय वैष्णव कवियों की भाति प्रेमांद्र का कवि हदय भी अपने प्रारूप की प्रत्येक भाव-भंगिमाप ओत-प्रोत है, उनके विष में व्याकुल है, उनकी याद से भीग उठता है और उनके दर्शन न प्राण रंगों में हाराकर कर उठता है। कभी गोपियों भ्रमर के साथ कृष्ण को संदेश प्रेषित करती है त कभी उससे पुछ चेतना है।

रे बंसी बारे को संदेशव लायो रे, 'कृष्ण की याद सभको बाबारा कार गई परतु, कृष्ण एक बार जो मधुरा गये वहा से लौटकर गोकुल नहीं आ सके। परतु प्रेमखाँडि ने कृष्ण के इस प्रकार बाराहमासी के विषयों के परमुत मध्यकालीन काव्य ग्रंथ की प्रणाली के अनुसार -

"अधिक मासे आवृजो रे राम कृष्ण की जोड़ प्राण सन्देशी शामणे पृथ्वी गोपी ना सरये जोड़"
इस प्रकार का एक मुखान मोड़ लाकर उपस्थित कर दिया है।

1 Gujarat and its literature - P - 217
2 कृष्ण विरह - प्रेमखाँड़ि पदावली पु ६४ पद २७६
3 कृष्ण विरह - प्रेमखाँड़ि पदावली पु १९ पद २६५
(२:२:९) सहजानंद - संकीर्तन

"गुरु गोविंद दोऊ खेड़े काकेक लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने जो गोविंद दियो बलताय।"

उपरोक्त परंपरा भाषा के लिए कोई नवीन परंपरा नहीं है। गुरुवार का द्वार दिखाने प्रभु को ओर आयार करने इत्यादि की ओर सदरुक्तिक निर्देशण गुरू से प्राप्त कर मनुष्य इस असार संसार सागर के दुःखो को बलताय दैवीय सुख को कमजोर करता रहा है। परंतु प्रेमानंद के स्वयं स्वयं सहजानंदजी ने। उनके प्रेम भक्ति की कविता में कवि हृदय 'गहरे पानी पेट' को तरह प्रेम-भक्ति में दूब जाता है।

'अक्षरी ब्रह्म निवासी परताप पूर्ण ब्रह्म प्राप्त क्षर अक्षर पर आदि नारायण पुरुषोत्तमस्वामि'

"इश्वरी आदि देव अजतारी
दिनुभुज साक्त श्रीनाथ जी" (१)

प्रेमानंद काव्य भाग १ में 'भक्ति चित्रास' और 'लीलाकर्ण' तथा भाग - २ में विश्र-विलाम आदि के पदों में कृष्ण कीतान के साथ ही साथ सहजानंद संकीर्तन का भी समावेश किया गया है। उन्होंने अपनी प्रेम भक्ति के भजन अपने इत्यादि की प्रेम-सखी के भाष में गाए है।

प्रेमानंद स्वामी ने अपने इत्यादि आदि देव के पूर्व चरित्र की प्राप्ति भी सहजानंद स्वामी वनने के परमम उनकी लोगा, वर्तमान, भलच, वर्डेंरा, अहमदाबाद, आदि नगरों का यात्रा का ऊँचा नील बनते हुए गद्दर युमागर वहाँ की घटी नयी (उम्मत गंगा) बगरू के महामय ने पद लिखा है। इसके अतिरिक्त श्री सहजानंद स्वामी के मुख, नेत्र, नासिक, भुजा, छाती आदि अंगों पर उनकी चात, उनके रूप, वस्त्रालंकार युमागर उनकी आदि पर भी बड़े भाव से पद लिखा है।

(२:२:२:१०) अन्य सर्नन
प्रेमानंद स्वामी के अन्य सर्ननों में शिख से लक्षण, सत्संगी वेदना की रीत, उद्धव मार्ग की गणना संप्रदाय की दीक्षा विधि आदि बोधक प्रकार की सांप्रदायिक रचनाएं कहीं जा सकती हैं। इनके अतिरिक्त गीत, वार, तिथि, महीना, या बाराहमासी, थाली आदि का लेखन सांप्रदायिक भव-विभोर ढंग से किया गया है।

एकादशी आचार्य - रामकृष्ण का विरह, सत्यभामा का नाराजतन तथा तुलसी विचार आदि कृतियाँ की बड़े संख्या ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सत्यभामा नुम समय १६ पदों की रचना है। प्रसंग के सम्बन्ध भी है।

कलह प्रेम नारद के द्वारा प्रभावी भगवान द्वारा दर्शनाभ्यास श्रीकृष्ण का माननी तथा तेज भवनित की परन्तु सत्यभामा के द्वारा प्रकट की गयी आज स्त्री सहज बांधी में कृष्ण के साथ उसता संभाद तथा कृष्ण के द्वारा शब्द

१ प्रेमानंद काव्य - भा - १
मनने की प्रक्रिया आदि समस्त चरित्रों को उठाया करते हैं, व दृष्टांत को रसिक बनाते हैं।

बातों की दृष्टि से संतोषकारक कथात्मक रचना प्रेमानंदस्वामी का 'तुलसी विवाह' है। ६५ पदों की इस रचना में मध्यकालीन आख्यान की अनेकों विशेषतता दर्शिए रहती है। तुलसी शालोग्राम का वर्ण नीति से विवाह होते चला आया है। इस संगीतोंका काल का विषय बनाकर स्मरणीय प्रिया की दर्शात तथा श्रीकृष्ण के पिता वाचुदेव के अनुमोदन से विशिष्ट पुरवाधुक्त श्रीकृष्ण तथा स्मरणीय के लन्दन तथा राजा के तरह को लगते हैं तत्क ने कथात्मक भुमिका को उभराया है। मंडलपरम्परा, गणेशपूजन, ग्रहशाला, आदि यादव पक्ष की बात की सोभा तथा की सोभा, दुर्गापूजा, खाना-पाना, प्रणाम-प्रहण, मंगल-फेरा, कृष्ण-विदा आदि इस साप्ताहिक के द्वारा इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है। मानो कवि स्वयं इन सभी अनुभवों के बीच से मिलता रहे हैं।

प्रेमानंद स्वामी की अन्य रचनाओं में कितनी ही रचनाएँ कथात्मक कहीं जा सकती हैं, श्री साहाजां: स्वामी के साथ प्रेमानंद स्वामी के साथ प्राप्त अनुभव उनके समक्ष की दृष्टि, गान, सिटी के जग का आदर्श करना, संप्रदाय के प्रसार के लिए उस्महोल्ड कहाँ कहाँ उपयोग है। सब प्रेमानंद स्वामी के जीवन के अभिन्न अंग के रूप में उन्होंने अपने समय का सुप्रभाव श्री जी के आदेशानुसार काल्य संस्करण की प्रमुखता में किया।

प्रेमानंद स्वामी ने गुजराती में तो लिखा ही है, परंतु इनके द्वारा लिखित ब्रज, हिंदी में नियमं हुए जहां किसी भी प्रकार से गुजराती के लिए हुए पदों से कम नहीं है संभावन: अधिकर ही हों।

प्रेमानंद स्वामी का अभ्यास अन्य ज्ञान कितना होगा? दिशा के परमात्मा संस्कार: श्री जी महादेव के आदेशानुसार उन्होंने संस्कृत अभ्यास किया। प्रतीत होता है कि इसी अभ्यास के कारण 'जय जय जय पगर्दा मनोहर' यह अष्टक तथा 'पार्थ मा पार्थ मा भवसागर' यह भैरवी राग का भाषण तथा 'कलिमनानत अतिशय विनाश' जैसे समास लिखने की तथा 'शिल्पायत्री' का आनुवाद कर सकनेवाले समय की ही है। श्रीमद्भागवत का तथा विशेषकर उसके 'दशमस्वंद' का अभास तूम के परिशोचन से अधिक उम्मी द्वारा के नगर के त्रावण से संबंध है, यह स्पष्ट है।

मानसंह, मौर्य, प्रेमानंद तथा अन्य पुरोगीका कवि तथा सामकालिक दैवस्वामियों जैसे मध्यकालीन कवियों की गुजराती कविता तथा हिंदी में पुष्ट संस्कार के अवशेष कवियों की तथा खासकर मूल्यांकन तथा तुलसीदास की विशेषता को अवश्य ही प्रेमानंदस्वामी जी के अनुसार उनका अभ्यास पता चला है। इसका यह कारण है कि कविता का प्रभाव अलग से श्लोकात्मक रूप में इस कवि का पता चला है। कहीं पदों में कहीं पदयों में अथवा कहीं किसी पंडित में उपयोग कवियों का प्रभाव दृष्टिगोचर हो जाता है, परंतु ऐसी पंडित कण्ठ अधिक नहीं है, यह बहुत स्थायीत्व निश्चित है कि यदि कोई कवि अथवा उसके अनुपादक एक ही विषय पर कविता चलाता है तो वह विषयों को कई विषयों में अपने अस्तित्व का उपयोग के अनुसार बोलता तो अवश्य है। परंतु धर्मैक और दृष्टि के अनुसार उपयोग करने पर आ जाता है। इससे कहीं न कहीं, कवियों ने कभी अपने सामान्य समय वा अपने विचार सामान्य तौर पर मिलते हैं।
प्रेमानंदस्वामी ने भी श्रीकृष्ण के उपर अपनी लेखनी चलाई। प्रेमानंद से पहले उपरोक्त कई कवि इस विषय लिख चुके थे। अतः स्वभावतः साम्प्रदायक रूप से दृष्टिगोचर होती जाती है। कहीं प्रेमानंद में मोरां का विषय होता है तो कहीं नरसिंह का कहीं सूर का तो कहीं दयाराम का। परंतु केवल इलाके हर देकर कवि अपनी पूरी तन्त्रिकता के साथ अपने प्रभाव लोक में विचरण करता है, यही कवि की समानता है।